०७.२०२१

History of Ancient India

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College,
Chakiya.

संगम काल

संगम शब्द मिथक है या वास्तविकता

संगम साहित्य

संगम साहित्य को मोटे तौर पर दो समूहों में बाँटा जा सकता है:- आख्यानात्मक और उपदेशात्मक आख्यानात्मक ग्रंथ मेलकन्कु अर्थात 18 मुख्य ग्रंथ कहलाते है। उपदेशात्मक ग्रंथ किलकन्कु अर्थात 18 लघु ग्रंथ मे, निण्णै, पदित्तुपत्तु, परिपाडल, अहनानूरू पुरुनानूरू आदि प्रमुख है। 'पदित्तुपत्तु' मे चेर राजाओं की प्रशंसा मे 8 कविताएँ है तो 'परिपाडल' मे देवताओं की प्रशंसा मे 20 कविताएँ है।

किलकणक्कु मे 18 लघु ग्रंथों का संग्रह है तमिल साहित्य की इसरी तह मे आर्य प्रभाव बहुत अधिक मात्रा मे दृष्टिगोचर होता है यह जैन प्रभाव भी देखने को मिलता है किलकणक्कु साहित्य भी तिरुक्कुरल है। इसमें तिरुक्कुरल तथा नलदियार महत्वपूर्ण है। तिरुक्कुरल को तमिल साहित्य का बाइबल कहा गया है।

संगम काल के रचनाओं को वर्गीकरण के अन्य आधार भी है जैसा कि इसका विभाजन "अगम" तथा "पुरम" मे हुआ है अगम अतरंग यानि प्रेम सम्बन्ध पुरम - बाह्य अथवा राजाओं की प्रशंसा से सम्बन्धित है। इसका विभाजन क्षेत्र के अनुसार भी किया गया है संपूर्ण साहित्य को 5 तिणै मे विभाजित किया गया है जैसे।—

(1) कुरिंजी → पर्वत क्षेत्र

(2) पल्लई → निर्जल क्षेत्र

(3) मुल्लइ — जंगल क्षेत्र
(4) मरुदम् — कृषि क्षेत्र
(5) नेगतल — तटीय क्षेत्र

संगम साहित्य पर 6वीं सदी में आर्यों का प्रभाव संपूर्ण तमिल भूमि पर देखा गया। तमिल कवियों ने भी बड़ी-बड़ी कविताएं लिखनी प्रारंभ कर दी। इन्हें संस्कृत नाम की तरह महाकाव्य से संबोधित किया गया। इस श्रेणी का प्रथम ग्रंथ शिलप्पादिकारम् है। इसके कविता का परंपरागत लेखन महान चोल सम्राट करिकाल के पौत्र इलंगोवादिगल ने किया ? इसमें कोवलन तथा कण्णगी की दुखांत गाथा है। काव्य के अंत नायिका माधवी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है इस रचना तमिल जनता का राष्ट्रीय काव्य माना जाता है। इस ग्रंथ में श्रीलंका के शासक गजबाहु की भी चर्चा की गई है। माना जाता है कि वह उस समय उपस्थित था जब शेनगुट्टुवन ने कण्णगी के लिये एक मंदिर स्थापित किया था। दूसरा महाकाव्य मणिमेखलई है। इसके रचनाकार सत्तनार नामक कवि है। इसमें माधवी तथा कोवलन से उत्पन्न पुत्री मणि-मेखलई और राजकुमार उदयकुमारन के मध्य के प्रेम संबंधों की चर्चा है। विभिन्न घटनाक्रम के मध्य मणिमेखलई भी माता की तरह बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है। तिरुक्कदेवर द्वारा लिखित जीवक चिंतामणि तीसरा महाकाव्य है इसमें जीवक जैसे योद्धा के अद्भुत कार्य वर्णन किया गया है किन्तु यहाँ भी दिखाया गया है कि वह अंत में जैन धर्म ग्रहण कर लेता है

Paper- IV Date - [illegible]

History of Modern Europe 18.02.2020

रूस की क्रांति

Dr Deepak kumar Raja
Guest professor
S.R.A.P. College, MUZ

परिचय

रूस की क्रान्ति विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण विभाजक रेखा बन जाती है। इसने विश्व राजनीति में सर्वहारा तथा बुर्जुआ के बीच विभाजन को एक संस्थागत आधार प्रदान कर दिया। एक दृष्टि से इसने फ्रांस की क्रान्ति को पूर्ति प्रदान की तथा कुछ ऐसे प्रश्नों का भी उत्तर देने का प्रयास किया जो फ्रांस की क्रांति के मध्य अनुत्तरित रह गये थे। रूस की क्रांति के बाद व्यवस्था को एक गहरी चुनौती मिली क्योंकि विश्व स्पष्ट रूप में दो भिन्न खेमों में विभाजित हो गया था।

कारण :-

रूस में एक कठोर राजनीतिक संरचना स्थापित थी। 19वीं सदी के मध्य पश्चिमी यूरोप की राजनीतिक संरचना परिवर्तित हो चुकी थी व राजतंत्र की शक्ति सीमित की जा चुकी थी परन्तु रूसी राजतंत्र अपना विशेषाधिकार छोड़ने को तैयार नहीं था। यद्यपि 20वीं सदी के आरम्भ में रूस में संस्थागत परिवर्तन आरम्भ हो गये थे परन्तु अभी भी रूसी लोगों को आम नागरिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। फ्रांस के समाज के तरह रूसी समाज भी विभाजित था। समाज का विभाजन कुलीन एवम् दासों के बीच था। एक रूसी शासक जार अलेक्जेंडर ने 1860 में कृषि दासता को समाप्त कर दिया। फिर भी वहाँ दासों की स्थिति अच्छी नहीं हुई क्योंकि उनके बीच भूमि का पुर्नवितरण नहीं किया गया था।

19वीं सदी के अन्तिम दशकों में रूस में कृषि एवम् औद्योगिक प्रसार की प्रक्रिया आरम्भ हो गयी थी। एक महत्वपूर्ण विशेषज्ञ सर्जेई विट्टे के अन्तर्गत रूस के औद्योगिकरण को प्रोत्साहन दिया गया था किन्तु इस औद्योगीकरण ने रूसी जनता को कुछ वर्गों को असंतुष्ट कर दिया।

स्टालिन के अन्तर्गत रूस में कृषि सुधार की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला परन्तु जैसा कि स्वयं स्टालिन ने ही घोषित किया था। उसके कृषि सुधार का उद्देश्य धनी किसानों का एक वर्ग पैदा करना है जो एक तरफ औद्योगिक वस्तुओं के बाजार का काम करेगा वहीं इसरी तरफ समाज को स्थायित्व प्रदान करेगा।

इसी औद्योगीकरण पश्चिमी पूंजीवादी औद्योगीकरण से भिन्न था। यहाँ कुछ ही क्षेत्र में महत्वपूर्ण उद्योगों का संकेन्द्रण हुआ। इस तरह इस तरह इस औद्योगीकरण ने जहाँ एक तरफ इसने सर्वहारा वर्ग को जन्म दिया वहीं इसरी तरफ इसने सर्वहारा वर्ग में वर्गीय चेतना तीव्र कर दी। इसके परिणाम स्वरूप 19वीं सदी के अन्त में दो दल अस्तित्व में आये उदाहरण के लिए, 1895 में सोसल डेमोक्रेटिक पार्टी का गठन हुआ। इसने औद्योगिक मजदूरों को अपना आधार बनाया। फिर 1901 में सोशल रेवोल्यूशनरी पार्टी का गठन हुआ। इसने किसानों को अपना आधार बनाया। 1903 में साध्यम एवं अनुशासन के मुद्दे पर सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में फूट पड़ गयी। इसके परिणाम स्वरूप मेनशेविक व बोलशेविक दल अस्तित्व में आये।